

Review Questions: चरित अण्ड

Date sent: July 6, 2018

- (1) F पुद्गलनी चरित की आत्मविशेष मानवी ले सायु शान हो. ^{नही}
- (2) I लोकोत्तर चरितने संसारित लोकोत्पत्तेकी सरपाय न शक्य
- (3) F संख्यान काणना आनुष्यवाणा मुनि आदीवा असंख्यान काणना आनुष्यवाणो हवे आत्माना खनना सुणने लोकाय शिके. ^F
- (4) F विषयो जेम जेम लोकोववासां आवे तेम तेम आचरितनी साग धरे हो.
- (5) I आत्माना गुणानो अनुभव तरवो ले न सायु चरित हो. ^{नही}
- (6) I "लंघ" को पुद्गलने स्वभाव हो, आत्मानो नही
- (7) F आत्मगुणानो अनुभवकी प्राप्त धरि चरित निरव्य नही ^{हो.}
- (8) F आत्माना शुद्ध स्वरूपमां चरित धरि आत्मानो जगतना ^{संशय नार} जलुन कोहो पहायो आकधी शिके हो.
- (9) F आत्मा कोहो न चार जाहू पहे मरान जन हो. ^{उत्तरे नार}
- (10) F आत्मानो लाम तरवार चरितानो विषयो जलुन धरि हो. ^{संशय नही}
- (11) I विषयो हो हरनी चरित के पुष्टि धरि नही परंतु चरिता वधी हो.
- (12) I जोह हव्यो जेम हव्यमां प्रवेशे धरि शिकतो नही.
- (13) F पुद्गलने ही जवो आत्माना स्वरूपना पारमाधिक ज्ञानेने सतत माहो हो. ^{उत्तरे नार}
- (14) I जोह हव्य जेम हव्यो हव्यांतर न ही शिके पहा ^{अज्ञानी - ज्ञानी जने पर्यायानर अनु.} पर्यायानर करी शिके.
- (15) F लगभग 66% पुद्गलो परहव्य तरवोय हो.
- (16) I परहव्यो मारा हो ले मान्यता ल्याति हो, कल्पना हो.
- (17) F जो आत्मा पोताना स्वभावमां लोवे तो शुभ कर्मजंघे धाय.
- (18) I आत्मानं ही जवोने ध्यानरूपी अभूतना आडकारोनी परंपरा लोवे हो.
- (19) I चरितने जन्म आधनार जने चरितनुं रक्षिण तरवार "आर प्रपयन माता" हो.
- 20) I आत्मा पुद्गलना गुणानो लोकिता नही, पहा ज्ञाना हो.
- 21) I आत्मा जने पुद्गल जने हव्यो परस्पर निम्न स्वभाववाणा हो.
- 22) I ज्ञानकी आत्मा माहो हो के वस्तुमां स्याह हो, परंतु वस्तु स्याहपर लागे हो मोरे ना उदवही.
- 23) F पांचेय चरितानो विषय सुणो मजवाकी चरित मराराज चरित हो
- 24) F १ मर = २ $\frac{1}{2}$ कलाक
- (25) I आचारने रसास्वाद माहो तो मोरेनीयनो उदव हो.